इकाई - 3

भूमध्यरेखीय परिवेश में मानवीय अभिक्रिया
(Human Activities in Equatorial Environment)

पाठ - 6

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

6.0 उद्देश्य (Objective)

6.1 परिचय (Introduction)

6.2 भूमध्यरेखीय परिवेश एवं मानव (Equatorial Environment & Man)

6.3 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Condition and Life Style)

6.4 निष्कर्ष (Summing up)

6.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

6.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

6.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

6.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को भूमध्यरेखीय परिवेश में मानवीय अभिक्रिया के बारे में बताना है। इस अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे।

- भूमध्यरेखीय परिवेश के भौतिक स्वरूप को
- भूमध्यरेखीय परिवेश एवं मानवीय स्वरूप को तथा
- भूमध्यरेखीय परिवेश में अर्थतन्त्र के स्वरूप तथा मानवीय जीवन शैली को।

6.1 परिचय (Introduction)

पर्यावरण के तत्त्व समग्र रूप में समग्र स्थानों में मानवीय अभिक्रिया को प्रभावित करते हैं। कुछ स्थानों में तो मानव अपनी तकनीकी से इस नियंत्रण को कम करता है, परन्तु कुछ विशेष पर्यावरणीय परिस्थितियों में भौतिक नियंत्रण कम करना कठिन हो जाता है ऐसे अतिवादी परिस्थितियों में भूमध्यरेखी प्रदेश है। यहाँ सर्वत्र ही भौतिक नियंत्रण मानव समाज पर देखने को मिलता है।

भूमध्यरेखीय प्रदेश के अन्तर्गत विषुवत रेखा के दोनों ओर अक्षांश के मध्य फैले भू-क्षेत्र आते हैं जिसमें दक्षिणी अमेरिका का आमेजन बेसिन, अफ्रीका का कांगो बेसिन और दक्षिणी यूगै एशिया के कुछ द्वीप सम्मिलित हैं।

6.2 भूमध्यरेखीय परिवेश एवं मानव (Equatorial Environment and Man)

भूमध्यरेखीय परिवेश में सालों साल उच्च तापमान, अत्यधिक वर्षा, सघन वनस्पति एवं विभिन्न

प्रकार के जीव जंतुओं की प्रधान भूमिका है। वर्ष भर सूर्य के लम्बवत् रहने के कारण यहाँ सादा उच्च तापमान, (औसतन 30°) बना रहता है। अधिक तापमान से उत्पन्न संवाहनिक वर्षा प्रतिदिन होती है।

अधिक तापमान और वर्षा के कारण यहाँ सघन वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। अधिक वर्षा से ही अमेजन एवं कांगो जैसी विशाल नदियों का विस्तार हुआ, जहाँ जलीय वनस्पतियों एवं जीवों का विकास अत्यधिक होता है। अफ्रीका के भूमध्यरेखीय वनों में लगभग सात-आठ हजार प्रजातियों के वृक्ष एवं लताऐं पाई जाती हैं। सघन वनस्पति एवं कम प्रकाश के कारण इन वनों में चलना कठिन हो जाता है। यहाँ के सघनव वनों का आर्थिक महत्त्व भी है।

इन वनों में अधिकतर ऐसे जीव जन्तु पाए जाते हैं जो पेड़ों पर निवास कर सके, नदियों में रह सके या फिर सीलन पूर्ण धरातल पर जी सके। बड़े जानवरों में हाथी, चीता, भैंसा, सुअर, गैंडा विशेष है। सीलनपूर्ण धरातल पर कीड़े-मकोड़े एवं वृक्षों पर बन्दर एवं चिड़ियाँ जैसे जीवों की प्रधानता है। यहाँ अनेक प्रकार के जहरीले साँप मक्खियाँ एवं कीड़े पाए जाते हैं। इस जटिल वातावरण यहाँ मानव जीवन कष्टमय होता है, फलस्वरूप यहाँ मानव बसाव का न्यूनतम क्षेत्र रहा है।

6.3 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Activities and Life Style)

इस जटिल भौतिक परिवेश में निवासित मानव समाज आज भी आदिवासी जीवन पद्धति में ही जीता है। कुछ क्षेत्रों में जहाँ पर आदिवासियों का सम्पर्क बाहरी लोगों से हो पाया है। उसी क्षेत्रों के लोगों में परिवर्तन नजर आते है, कठिन पर्यावरणीय परिस्थितियों का सघन प्रभाव यहाँ के निवासियों पर देखा जा सकता है। वर्तमान समय में भी यहाँ की जीवन-पद्धति प्रकृति प्रधान है।

उमसयुक्त आर्द्र-उष्ण जलवायु एवं सदाबहार वन एवं विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं से युक्त परिवेश में रहने वाले यहाँ के निवासी विश्व के पिछड़े लोगों में से है, जो आज भी शिकार और फल-मूल से अपना भोजन एवं छाल, पत्ते से अपना वस्त्र तथा मिट्टी-फूस का गृह एवं लकड़ी-लोहे के सामान्य हथियारों से ही काम चलाते हैं।

विषुवतीय प्रदेश का विस्तार

इस जटिल भौतिक परिवेश में निवासित यहाँ के लोग शिकार, पशुपालन, मत्स्य, वन-वस्तु संग्रह और सीमित कृषि से ही जीवनयापन व्यतीत करते हैं। यहाँ के सघन जंगलों में विविध प्रकार के जीव-जन्तु होते हैं जिनका शिकार करना यहाँ के लोगों का जीवन आधार रहा है। ये अत्यन्त चतुर एवं फुर्तीले शिकारी होते हैं। निकटवर्ती नदी, झीलों, नालों में ये मछली मारने का कार्य भी करते हैं।

अर्थतन्त्र के अलावा इनकी शारीरिक विशेषताओं पर भी यहाँ की जलवायु एवं वनस्पति का प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देता है। उष्ण आर्द्र जलवायु के कारण यहाँ के लोगों छोटे कद, काले रंग, मोटे होंठ, घुँघराले बाल, चपटी नाक एवं छोटी आँख वाले होते हैं। छोटे कद के कारण ही इन्हें बौना (पिग्मी-Pigmy) कहा जाता है। भूमध्यरेखीय निवासियों को ही अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। जैसे-आमेजन घाटी के निवासियों को 'बोरो', मलाया महाद्वीप के लोगों को 'सेमांग' अफ्रीका के भूमध्यरेखीय वनों के निवासियों को 'पिग्मी' कहा जाता है।

ये मांस, मछली, फल, कन्दमूल एवं अन्न का भोजन करते हैं। उष्ण जलवायु के कारण इनके लिए वस्त्र की उपयोगिता बहुत कम है। अपने तन को ढकने के लिए ये कमर के नीचे खोल या पत्तियाँ लपेट लेते हैं। स्त्रियाँ विविध जंगली पत्तों, फलों का प्रयोग वस्त्र के रूप में तथा आभूषण के रूप में करती हैं।

सीलन भरे धरातल एवं जीव-जन्तुओं से रक्षा को ध्यान में रखते हुए ये ऊँचा मकान एवं झोपड़ी बनाकर रहते हैं, जो काष्ट एवं फूस से निर्मित होती है। इनकी झोपड़ियाँ गोलाकार होती हैं। 10 या 15 झोपड़ियों का एक समूह होता है जिसे इनकी बस्ती कहा जाता है। प्रत्येक परिवार की एक झोपड़ी होती है। एकाकी परिवार पेड़ों पर अपना घर बना लेता है जो सुरक्षा और शिकार के दृष्टिकोण से लाभकारी होता है।

ये अन्धविश्वासी एवं परम्परावादी होते हैं। इनका सामाजिक संगठन अत्यधिक सरल होता है। जंगल इनके जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करता है, फलस्वरूप यहाँ के लोग वन देवता की पूजा करते हैं। सभी झगड़े एवं कलह आपसी बातचीत से ही सुलझाये जाते हैं, यहाँ कोई भी पंचायती कानूनी संस्था नहीं है। इनकी आदिम जीवन पद्धति, कुपोषण एवं बीमारियों के कारण इनकी संख्या दिनों-दिन कम होती जा रही हैं। यहाँ पर बाह्य संस्कृति का प्रभाव न्यूनतम पड़ा है। जहाँ बाह्य लोगों का प्रवेश इन क्षेत्रों में हुआ है, वहाँ से श्रमिक का कार्य करते हैं। कुछ क्षेत्रों में अवश्य ही सम्पर्क के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं परन्तु इस क्षेत्र के मूल निवासी आज भी बाहरी सम्पर्क से दूर रहना चाहते हैं।

6.4 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि जटिल भौतिक परिवेशों में से एक भूमध्यरेखीय प्रदेश है। भूमध्यरेखा के दोनों ओर अक्षांश मध्य फैले भूक्षेत्र पर इसका विस्तार है। वर्ष भर उच्च तापमान संवाहनिक वर्षा सघन वनस्पति इस प्रदेश की विशेषता है। सघन वनस्पति एवं कम प्रकाश के कारण इन वनों में चलना कठिन हो जाता है। इन वनों में अधिकतर ऐसे जीव जन्तुएँ पाए जाते हैं जो पेड़ों पर, नदियों में तथा सीलन भरे धरातल पर निवास कर सकें। यहाँ अनेक प्रकार के जहरीले साँप मक्खियाँ एवं कीड़े-मकोड़े पाए जाते हैं। प्रारंभ से ही इन्हीं सब कारणों स यह क्षेत्र मानव बसाव का न्यूनतम क्षेत्र रहा है। इस कठिन पर्यावरणीय परिस्थितियों में निवासित मानव समाज अभी भी आदिवासी जीवन पद्धति में ही जी रहा है। यहाँ के अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली पर पर्यावरण का प्रत्यक्ष प्रभाव है। भौतिक पर्यावरण का नियंत्रण इतना प्रबल है कि उसे

कई हजार वर्ष के समायोजन से भी सुधारा नहीं जा सकता है। आज भी यहाँ सम्पूर्ण जीवन पद्धति प्रकृति प्रधान है। कठिन भौतिक परिवेश में निवासित यहाँ के लोग शिकार, पशुपालन, मत्स्यपालन, वन वस्तु, संग्रह का सीमित कृषि से जीवनयापन व्यतीत करते हैं। इनके आर्थिक क्रिया-कलापों के अलावा इनकी शारीरिक विशेषताओं पर भी वहाँ की जनसंख्या का प्रत्यक्ष प्रभाव नजर आता है। यहाँ के लोगों का कद छोटा, रंग काला, होंठ मोटे, घुंघराले बाल, चपटी नाक, छोटा आँख होता है जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नामों, पिग्मी, सेमांग, बोरो इत्यादि नामों से जाना जाता है। ये अंधविश्वासी एवं परम्परावादी होते हैं। इनकी सम्पूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन शैली सरल एवं पर्यावरण से प्रभावित है, अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भूमध्यरेखीय प्रदेशों में रहने वाले मानव का जीवन पूर्णतः प्रकृति प्रधान है।

6.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

आदिवासी (Tribe) :- भौतिक परिवेश के अनुरूप जीवनयापन करनेवाले आधुनिक सभ्यता को पीछे जीने वाले विशिष्ट मानव समूहों को 'आदिवासी' के नाम से जाना जाता है।

पिग्मी (Pygmies) :- अफ्रीका के भूमध्यरेखीय वनों में निवास करनेवाले मानव समूहों को 'पिग्मी' के नाम से जाना जाता है।

सेमांग (Semang) :- मलाया प्रायद्वीप के भूमध्यरेखीय वन प्रदेश में आखेट एवं वन वस्तु-संग्रह करने वाली आदिवासी जाति को 'सेमांग' कहते हैं।

बोरो (Boro) :- दक्षिण अमेरिका स्थित अमेजन नदी घाटी के पश्चिम घाटी में निवास करनेवाली आदिम प्रजाति को 'बोरो' के नाम से जाना जाता है।

6.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. भूमध्यरेखीय परिवेश में मानवीय अभिक्रिया के स्वरूपों का वर्णन करें।
2. भूमध्यरेखीय परिवेश एवं मानव अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करें।

6.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
2. डा० श्रीवास्तव एवं राव - मानव भूगोल
3. बी० एन० सिंह : मानव भूगोल
4. एस० डी० कौशिक - मानव एवं आर्थिक भूगोल
5. L.R. Singh : Fundamentals of Human geography
6. Bergman : Introduction of Geography : People, Places and Endorment.

●●●

मानसूनी परिवेश में मानवीय अभिक्रिया
(Human Activities in Mansoon Environment)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

7.0 उद्देश्य (Objective)

7.1 परिचय (Introduction)

7.2 मानसूनी परिवेश एवं मानव (Monsoon Environment & Man)

7.3 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Condition and Life Style)

7.4 निष्कर्ष (Summing up)

7.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

7.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

7.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

7.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को मानसूनी परिवेश में मानवीय अभिक्रिया के बारे में बताना है। इस अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे।

- मानूसनी परिवेश के भौतिक स्वरूप को
- मानसूनी परिवेश एवं मानवीय अन्तर्सम्बन्ध को एवं
- भूमध्यरेखीय परिवेश में अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली को।

7.1 परिचय (Introduction)

विश्व के सुहावने स्थल में से एक है मानसूनी प्रदेश! मानसूनी परिवेश विश्व के उन उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है, जहाँ मौसमी परिवर्तन के तहत ग्रीष्मकाल उष्ण और आर्द्र तथा शीतकाल शुष्क होता है, एवं मौसमी वर्षा के कारण ही इसे मानसूनी जलवायु का प्रदेश कहते हैं। मुख्यत: यह प्रदेश दोनों गोलार्द्धों में से अक्षांशों के महादेशों के पूर्वी भाग में फैला है।

क्षेत्र :- इस जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत मुख्यत: निम्नलिखित देश एवं क्षेत्र आते हैं।

(i) एशिया में दक्षिण चीन, भारत, म्यांमार, थाइलैंड, बांग्ला देश, पाकिस्तान आदि।

(ii) अफ्रीका में दक्षिणी सूडान, मेडागास्कर,

(iii) दक्षिण अमेरिका में ब्राजील, बेनेजुएला तथा कोलंबिया के कुछ क्षेत्र,

(iv) उत्तर अमेरिका में मेक्सिको एवं पश्चिम द्वीप समूह एवं

(v) आस्ट्रेलिया का उत्तरी तटीय भाग।

मानसूनी परिवेश की विशेषताएँ :-

(1) मानूसनी जलवायु प्रदेश की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ जाड़े एवं गर्मी की अलग-अलग ऋतुएँ होती हैं।

(2) लम्बे समय का उच्च तापमान एवं लघु अवधि का शरदकाल,

(3) पतझड़ी वनस्पतियों का विस्तार, समतल धरातल पर उपजाऊ मिट्टी का आवरण,

(4) धरातलीय जलस्रोतों की (नदियाँ, तालाब) उपलब्धता

(5) वर्षभर औसत - 150 वर्षा सेमी० के आसपास।

7.2 मानसूनी परिवेश एवं मानव (Monsoon Environment and Man)

मानूसनी परिवेश में मौसमी परिवर्तन से उत्पन्न सामान्य परिवेश सभी जीवों के लिए अनुकूलतम अवास्य का क्षेत्र है। यह विश्व का एकमात्र क्षेत्र है जहाँ सभी परिवेशों के जीव-जन्तु एवं वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। यहाँ विविध प्रकार के व्यावसायिक पेड़ एवं घासें पायी जाती हैं। फलाहारी वृक्षों में आम, अमरूद, सेव, केला, नाशपाती, अंगूर, अखरोट आदि का प्रमुख हैं। यहाँ रोपित वनस्पति, उष्ण तथा शीतोष्ण फसलों का संगम पाया जाता है जो अन्य किसी प्रदेश में नहीं है। पशुपालन के लिए भी आदर्श परिवेश उपलब्ध है। मानव स्वास्थ्य के लिए भी यह अनुकूलतम जलवायु का प्रदेश है।

यह विश्व का एक मात्र प्रदेश है जहाँ प्रकृति की अनेक उपहार मौजूद हैं जैसे नदी, झरने, तालाब, समुद्र, मैदान, पर्वत, पहाड़ इत्यादि। यहाँ प्रकृति की उदारता अतुलनीय है। यही कारण है कि यह प्रदेश अनादिकाल से मानव बसाव का क्षेत्र रहा है। ऐतिहासिक काल में भी एशिया का मानसूनी प्रदेश विश्व का अग्रणी विकसित प्रदेश रहा है। भारत की सिन्धु घाटी सभ्यता इसका प्रमाण है। अत: यह मानव बसाव का अनुकूलतम प्रदेश है।

7.3 अर्थतंत्र एवं जीवन शैली (Economic Activities and Life Style)

मानूसनी प्रदेश की अनुकूल परिस्थितियाँ अनादिकाल से कृषि, बागवानी, पशुपालन, उद्योग, व्यापार एवं सेवाओं के विकास के लिए आदर्श रही हैं। यही कारण है कि सिंधु घाटी सभ्यता का जन्म यहीं हुआ, जहाँ कृषि एवं पशुपालन सहित बस्ती का बसाव पाया जाता है। प्रकृति ने इस क्षेत्र में अनेक सहयोग प्रदान किया है। इस क्षेत्र के बारे में कहा जाता है कि बीज डालो एवं आराम से फल का सेवन करो, प्रकृति ने ऐसा सहयोग दिया है। घासयुक्त मैदानी भूमि रहने के कारण यहाँ पशुओं को भी पालना आसान रहा है। समतल मैदानी एवं अनुकूलतम प्रदेश रहने के कारण यहाँ अनेक उद्योग-धंधे का भी विकास हुआ है। सूती-वस्त्र उद्योग के मामले में तो यह विश्व-प्रसिद्ध प्रदेश रहा है।

ढ़ाका का मलमल, रेशमी परिधान एवं आभूषण के लिए एशिया का मानसूनी प्रदेश विश्वव्यापारियों के लिए आकर्षण का कारण रही है।

NAME
STD
SEC
TEACHER'S SIGNATURE
WORLD-OUTLINE
संसार-प्राकृतिक
Tropic of Cancer
SCALE
kms. 0 2000 4000 6000 kms.
© Government of India Copyright, 2003.
1. Based upon Survey of India map with the permission of the Surveyor General of India.
2. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate baseline.
3. The External Boundary and coast-line of India shown on this map agree with the Record / Master Copy certified by the Survey of India, Dehra Dun.
Publishers:-
INDIAN BOOK DEPOT (MAP HOUSE)®
2937, Bahadurgarh Road, Delhi-110006

उच्च आवश्यकताएँ शिक्षा कला, विज्ञान, राजनीति आदि में भी मानसूनी प्रदेश विशेषकर एशियाई भाग विश्व का अग्रणी प्रदेश रहा है। नालन्दा, तक्षशिला विश्वविद्यालय इसका प्रमाण है। कला के क्षेत्र में अंजता एलोरा, खजुराहो क्षेत्र तो विज्ञान के क्षेत्र में अनेक आविष्कार इसी प्रदेश में हुए हैं। राजनीति के मामले में भी प्रारंभ से ही यह प्रदेश उच्च रहा है। इस प्रदेश के आकर्षण के कारण बाह्य सदियों पूर्व से इस पर आक्रमण प्रारंभ हुए और इस प्रदेश को गुलामी का दंश झेलना पड़ा।

औपनिवेशिक साम्राज्य के कारण यहाँ मिश्रित संस्कृति की उत्पत्ति हुई। फलतः यह प्रदेश विश्व संस्कृतियों का समुच्च बन गया। सभी धर्मों के लोगों का यह प्रदेश विश्व संस्कृति प्रदेश का दर्पण बन गया। यहाँ पर हिन्दू, मुस्लिम, इसाई पारसी, यहूदी सभी धर्मों का अनुष्ठान केन्द्र है जो आज भी विश्व आकर्षण का केन्द्र बना हुआ हे। इसके कुछ वीरान क्षेत्रों में अभी भी आदिवासी जातियाँ निवास करती हैं जिनकी जीवन-पद्धति विशेष है। इस प्रदेश में उष्ण आर्द्र जलवायु में पलने वाले लम्बे गोरे चमड़े वाले लोग, दोनों पाए जाते हैं। गृह-निर्माण में भी यहाँ का भौतिक परिवेश अनूकुलतम रहा है, क्योंकि उच्चे पक्के दोनों मकानों के लिए प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध है।

आवागमन के साधनों के लिए भी यह प्रदेश स्थल एवं जल यातायात के दृष्टिकोण से प्रारंभ से ही उल्लेखनीय रहा है। मुख्यतः यह कृषि प्रधान गाँवों का देश है। इन्हीं कारणों से यह प्रदेश प्रारंभ से ही विश्व का सघन जनपन्न का क्षेत्र रहा है एवं वर्तमान में भी यह विश्व का सघन मानव अधिवास का क्षेत्र है।

7.4 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मानसून प्रदेश विश्व के सुहावन प्रदेशों में से एक है। प्रकृति की उदारता इस प्रदेश में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उर्वरा भूमि, नदी, झरने, मौसमी परिवर्तन इत्यादि इस प्रदेश के लोगों को प्रकृति ने अमूल्य उपहारस्वरूप प्रदान किये हैं। मानसूनी जलवायु प्रदेश में मौसमी परिवर्तन से उत्पन्न सामान्य परिवेश सभी जीवों के लिए अनुकूलतम आवास्थ का प्रदेश बन जाता है। यही कारण है कि यहाँ विविध प्रकार की वनस्पतियाँ, अनेक प्रकार के जीव-जन्तु पाए जाते हैं। यह विश्व का एकमात्र क्षेत्र है जहाँ सभी परिवेशों के जीव जन्तु एवं वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। मानव निवास के लिए सर्वाधिक अनुकूल यह प्रदेश प्रारंभ से ही मानव सभ्यता का विकास इसी प्रदेश में हुआ है। यथा लम्बा, गोरा, नाटा, काला, हिन्दू, मुस्लिम, यहूदी, सिक्ख, ईसाई, पारसी इत्यादि। विभिन्न धर्मों विभिन्न संस्कृतियों का यहाँ संगम पाया जाता है।

मानसूनी प्रदेश की अनुकूल परिस्थितियाँ अनादिकाल से कृषि, बागवानी, पशुपालन, उद्योग, व्यापार एवं अन्य सेवाओं के विकास के लिए आदर्श रहीं हैं। यहाँ का अर्थतन्त्र बहुआयामी रहा है। फलतः प्रारंभ से ही यह सघन बसाव का क्षेत्र रहा है।

7.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

(1) आदिवासी (Tribe) पिछले अध्याय की व्यवहृत शब्दावली देखें।

(2) औपनिवेशिक साम्राज्य :-

उन्नीसवीं सदी के सातवें दशक में, जब साम्राज्यवादी विस्तार का दौर आरम्भ हुआ तब से लेकर 1914 तक एशिया, अफ्रीका के लगभग सभी हिस्से तथा विश्व के कुछ अन्य भाग भी यूरोप के किसी-न-किसी साम्राज्यवादी देश के नियंत्रण में आ चुके थे। यूरोपीय साम्राज्य ने अपने-अपने उपनिवेश स्थापित कर औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार किया। मानूसनी प्रदेश के लगभग सभी क्षेत्रों पर औपनिवेशिक साम्राज्य का विस्तार था।

7.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

1. विश्व के मानसूनी जलवायु प्रदेशों में मानवीय अभिक्रिया का वर्णन करें।
2. ''विश्व के मानसूनी जलवायु प्रदेश एवं मानव का विकास'' तथ्य को स्पष्ट करें।

7.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. माजिद हुसैन : मानव भूगोल
2. जे० एन० दीक्षित - मानव भूगोल
3. डा० श्रीवास्तव एवं राव - मानव भूगोल
4. L.R. Singh : Fundamentals of Human geography
5. Kaox : Human Geography

●●●

शीतोष्ण घास प्रदेश में मानवीय अभिक्रिया
(Human Activities in Temperate Grass Land)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

8.0 उद्देश्य (Objective)

8.1 परिचय (Introduction)

8.2 शीतोष्ण घास प्रदेश एवं मानव (Temperate Grass land and Man)

8.3 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Condition and Life Style)

8.4 निष्कर्ष (Summing up)

8.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न (Questions for Exercise)

8.7 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

8.0 उद्देश्य (Objective)

इस पाठ का उद्देश्य छात्रों को शीतोष्ण घास प्रदेश में मानवीय अभिक्रिया के बारे में बताना है। इस अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे।

- शीतोष्ण घास प्रदेश के भौतिक स्वरूप को
- शीतोष्ण घास प्रदेश एवं मानव अन्तर्सम्बन्ध को तथा
- शीतोष्ण घास प्रदेश में अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली को।

8.1 परिचय (Introduction)

विश्व के कुछ भागों में कम वर्षा होती है वहाँ घास जैसी वनस्पतियाँ ही दिखाई देती है इनकी प्रधानता के कारण ही इस क्षेत्रों को घास के मैदान के नाम से जाना जाता है। विश्व में घास के मैदान दो प्रकार के होते हैं समशीतोष्ण एवं उष्ण-कटिबंधीय घास के मैदान।

समशीतोष्ण घास के मैदान को विश्व में अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है। मध्य एशिया में 'स्टेपी', उत्तरी अमेरिका में 'प्रेचरी' दक्षिण अफ्रीका में 'वेल्ड', आस्ट्रेलिया वं न्यूजीलैंड में 'डाउन्स' एवं दक्षिण अमेरिका में 'पम्पास' के नामों से जाना जाता है। पहाड़ों की ऊँचाई पर ऐसे घास के मैदान को अल्पाइन घास के मैान के नाम से जाना जाता है।

जलवायु की विशेषताएँ

महाद्वीपों के भीतरी भाग में स्थित होने और समुद्री प्रभाव से दूर पड़ जाने के कारण यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है जिसमें तापमान की अत्यधिक महाद्वीपीय प्रकार की है जिसमें तापमान की अत्यधिक विषमता पायी जाती है। वर्षा मामूली तौर पर सालों भर होती है, परन्तु बसन्त के अन्त एवं ग्रीष्म के प्रारंभ में अधिक होती है। वार्षिक वर्षा सेमी. से लेकर सेमी. तक पायी जाती हे। ग्रीष्म ऋतु में मानसूनी पवनों के प्रभाव से वर्षा होने के कारण, पूर्व से पश्चिम की ओर वर्षा की मात्र घटती जाती है। गर्मी में वाहनिक प्रकार की वर्षा होती है, पर जाड़े में चक्रवातीय प्रकार की वर्षा होती है।

दक्षिणी गोलार्द्ध के शीतोष्ण घास प्रदेशों में उष्ण समुद्री जलधाराओं का भी प्रभाव पड़ता है। जैसे-ब्राजील धारा, मोजाम्बिक धारा और पूर्वी आस्ट्रेलियाई धारा। इन धाराओं में से इस प्रदेशों में लगभग सेमी. वार्षिक वर्षा या इससे अधिक ही होती है। यहाँ अधिकतर वर्षा फुहारों के रूप में होती है। जाड़े के मौसम में उत्तरी गोलार्द्ध में तुषारपात एवं दक्षिणी गोलार्द्ध में वाला पड़ा करता है।

इन प्रदेशों में वार्षिक तापान्तर उत्तरी गोलार्द्ध में अधिक एवं दक्षिणी गोलार्द्ध में कम मिलता है।

8.2 शीतोष्ण घास प्रदेश एवं मानव (Temperate Grass Land and Man)

कम तापमान एवं साधारण नमी इस क्षेत्र में घासों के विकास के लिए आदर्श परिस्थिति उपलब्ध करती है। यहाँ घासोंके साथ झाड़ियाँ एवं बौने वृक्ष भी उपजते हैं। ऐसे परिवेश में शाकाहारी एवं मांसाहारी जीव जन्तुओं का साम्राज्य पाया जाता है। यही कारण है कि यहाँ पशुपालन व्यवसाय भी होता रहा है। जिन भागों में कृषि का विस्तार हुआ वहाँ समशीतोष्ण घास के मैदान लुप्त हो गये हैं। जैसे यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के पूर्वी एवं मध्यवर्ती भागों में। वर्तमान समय में शीतोष्ण घास की जगह अब व्यापारिक पशुपालन का विकास किया जा रहा है। जैसे-यूएसए का पश्चिमी भाग, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, द० अमेरिका एवं साइबेरिया में जहाँ सिंचाई एवं उर्वरक का प्रयोग कर घास के मैदानों को अधिक उपजाऊ बनाया गया है। ये क्षेत्र आज पशु उत्पाद कर प्रधान क्षेत्र हो गये हैं।

उत्तर अमेरिका के प्रेयरी देश में अधिक वर्षा होने के कारण लंबी एवं धनी घास पायी जाती है और यूरेशिया के स्टेपी क्षेत्र में कम वर्षा होन के कारण छोटी एवं बिखरी घासें मिलती हैं। सवाना प्रदेश की अपेक्षा स्टेपी प्रदेश की घास छोटी एवं मुलायम हुआ करती है। यहाँ पेड़ प्राय: नहीं मिलते, सिर्फ नदियों के किनारे ही कुछ पेड़ दिखाई देते हैं। आस्ट्रेलिया में कहीं-कहीं यूक्लिप्टस के पेड़ देखने को मिल जाते हैं।

समशीतोष्ण घास प्रदेश मानव बसाव का सामान्य क्षेत्र ही माना जाता है। यहाँ जनसंख्या सघन रूप में न होकर बिखरी-बिखरी पाई जाती है। मूल जनसंख्या के रूप में यहाँ आदिवासी (खिरगीज) रहते हैं। इनकी अधिसंख्य आवश्यकताएँ पशु उत्पाद से पूरी हो जाती है।

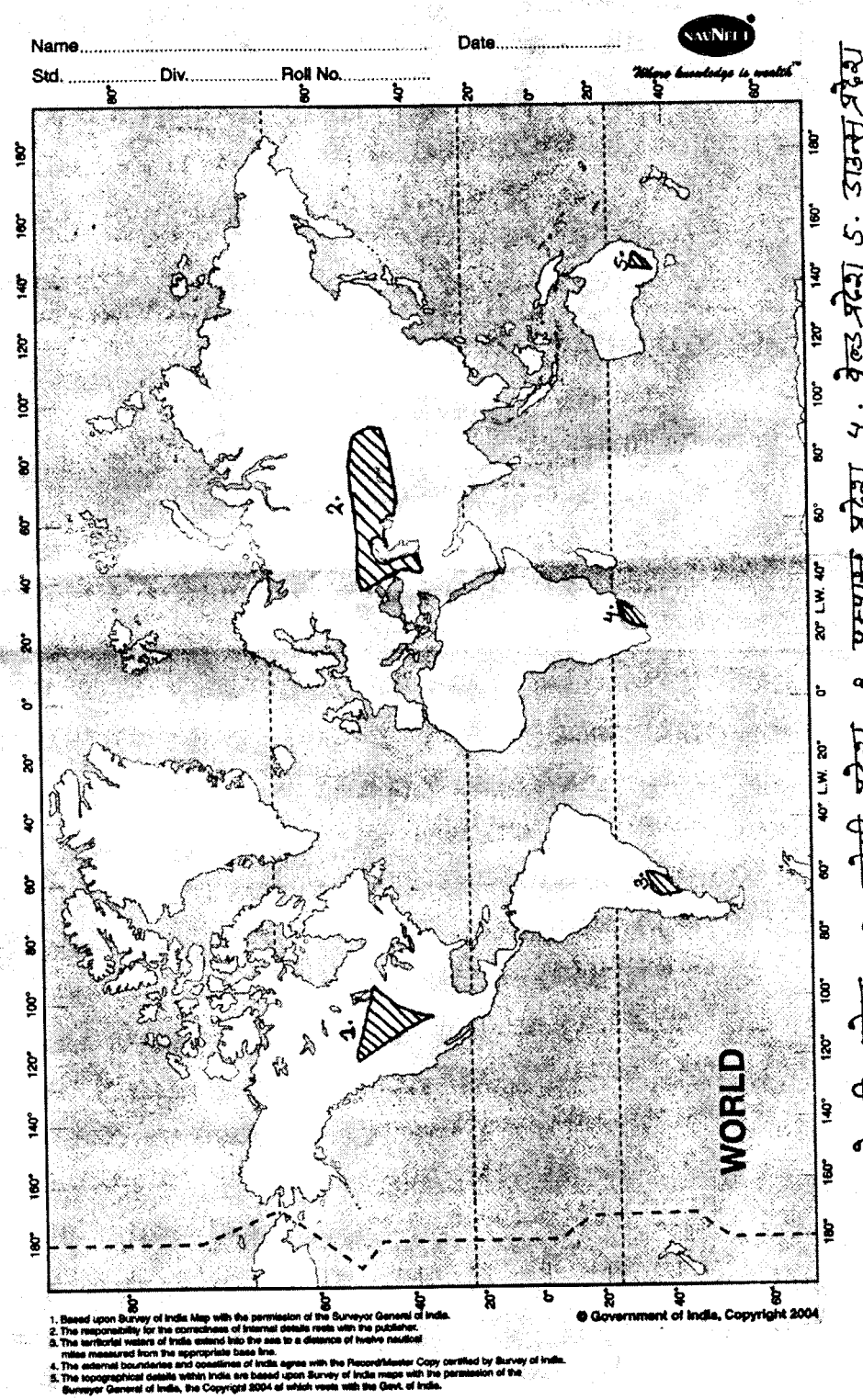

शीतोष्ण कटिबंधीय घास प्रदेशों की स्थिति एवं विस्तार

8.3 अर्थतन्त्र एवं जीवन शैली (Economic Activities and Life Style)

समशीतोष्ण घास के मैदानों का सम्पूर्ण आर्थिक तन्त्र घास के मैदान एवं पशुपालन पर आधारित है। इन प्रदेशों में मानव प्रारम्भ से ही पशुपालन का काम करता रहा हे। आज भी विश्व की सबसे अधिक भेड़ नहीं इन्हीं प्रदेशों में मिलती है। दक्षिणी पूर्वी आस्ट्रेलिया तथा अर्जेण्टाइना भेड़ पालन के लिए विश्वविख्यात प्रदेश माना जाता है। पशु उत्पादों के लिए भी यह प्रदेश विख्यात है। यहाँ से ऊन तथा मांस बाहर भेजा जाता है। विश्व के अन्य क्षेत्रों में यहाँ के पशु उत्पादों की माँग है। भेड़ के अतिरिक्त गाय एव बकरियाँ भी पाली जाती हैं जिनसे दूध पदार्थ तैयार किया जाता है। अर्थात् मुख्यतः पशुपालन एवं पशुओं पर आधारित उद्योगों का ही इस क्षेत्र में प्रचलन है।

इन प्रदेशों में आर्द्र भागों में तथा कुछ शुष्क भागों में सिंचाई द्वारा कृषि कार्य भी किया जाता है। आज विश्व की सबसे अधिक गेहूँ इन्हीं प्रदेशों से प्राप्त होता है। अब यह क्षेत्र कृषि कार्य में भी प्रगतिशील अवस्था में है। गेहूँ के अतिरिक्त मकई, सोयाबीन, जौ, राई इत्यादि फसलों की भी खेती की जाने लगी है। वर्तमान समय में आधुनिक वैज्ञानिक कृषि-पद्धति के सहारे यह क्षेत्र आज विश्व की प्रमुख कृषि एवं उससे संबंधित व्यवसाय का केन्द्र बन गया है। कृषि विकास की तीव्र गति को देखते हए इसे 'भविष्य का भण्डार' कहा जाने लगा है।

कृषि के अतिरिक्त इन क्षेत्रों में खजिज पदार्थों की भी बहुतायत है। लोहा, कोयला, पेट्रोलियम मुख्यतः खनिज पदार्थ के रूप में इस प्रदेश में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में यातायात की इतनी अच्छी सुविधा है कि सैकड़ों किलोमीटर दूर से भी व्यवसाय करने में परेशानी नहीं आती है। ब्यूनस आयर्स, कुबनेत्सक बेसिन जैसे प्रमुख औद्योगिक केन्द्र शीतोष्ण घास प्रदेश में ही आते हैं।कृषि उद्योग तथा यातायात के मार्गों के विकास ने इस क्षेत्र में क्रांति ला दी है। डेयरी उद्योग, चमड़ा उद्योग, ऊन उद्योग, कृषि उद्योग, खनिज पर आधारित उद्योग, सुगम यातायात के विकास को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस प्रदेश का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है। सूचना एवं तकनीकी क्रांति का प्रयोग कर इसे और भी उन्नत बनाया जा सकता है।

समशीतोष्ण घास के मैदानों में आदिवासी जातियों की जीवनशैली भी पशुपालन पर ही आधारित होती है। पशुओं से प्राप्त दूध, माँस उनका भोजन, ऊन, चमड़ा, हड्डी उनका वस्त्र, तम्बू और हथियार और कुछ संगृहित पशु उत्पाद व्यापार के आधार होते हैं, जिन्हें बेचकर वे अपनी आवश्यकता की अन्य वस्तुएँ खरीदते हैं, पशुओं के साथ घुमते रहने के कारण तम्बू गृह का काम करता है। कभी-कभी ये अपनी बस्ती भी बनाते हैं, जहाँ बहुधा जाड़े के मौसम में निवास करते हैं। समशीतोष्ण घास के मैदानों के आदिवासी प्रजातियों में गिरगीज विशेष उल्लेखनीय है। किरगीज मध्य एशिया के किरगीजिया विशेष उल्लेखनीय है। किरगीज मध्य एशिया के किरगीजिया पठार के निवासी हैं, जो दक्षिणी रूसी साइबेरिया में स्थित है। इनके नाम पर ही इस प्रदेश का नाम किरगिजस्तान रखा गया है।

यहाँ के निवासियों का वस्त्र पशुओं से प्राप्त ऊन, बाल एवं चमड़े पर आधारित होता है। ऊन एवं चमड़े का वस्त्र ही सालोंभर पहनते हैं। चमड़े की टोपी, ओढ़नी एवं जूता का प्रयोग करते हैं। ऊनी एवं चमड़े का लम्बा कोट पहनते हैं। इन क्षेत्रों में किरगीज का चमड़ा निर्मित तम्बू जिन्हे यूर्त कहा जाता है, चलता फिरता आवास, प्रायः देखने को मिल जाता है।

चलवासी जीवन-पद्धति के कारण यहाँ के निवासियों का सामाजिक संगठन बहुत अविकसित है। एक वर्ग दूसरे से सहयोग करता है, लेकिन हमेशा भटकते रहने के कारण ये आपसी संगठन बनाने में कमजोर होते हैं। अब विकसित चारागाहों पर स्थायी निवास भी बनाये गये हैं एवं कृषि को महत्त्व दिया जा रहा है जिससे स्थायित्व परंपरा को बल मिल रहा है। रूसी सरकार किरगीज चरवाहों के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्था की है जिससे उनका सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उत्थान हो सके।

अब इन क्षेत्रों में व्यापारिक पशुपालन, व्यापारिक, अन्न उत्पादन कृषि का प्रारूप देखने को मिलता है। आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी युक्त कृषि के बड़े-बड़े फार्म, फसल भंडार गृह इत्यादि के समावेश ने इस प्रदेश में क्रांति ला रही है। अत: यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र का भविष्य उज्जवल है।

8.4 निष्कर्ष (Summing-up)

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि शीतोष्ण घास प्रदेश का विस्तार विश्व के प्रमुख पाँच क्षेत्रों में हुआ है। मध्य एशिया में स्टेपी, उत्तर अमेरिका में प्रेयरी, दक्षिण अफ्रीका में वेल्ड, आस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलैंड में डाउन्स एवं दक्षिा अमेरिका में पंपास के नाम से जानने वाला प्रमुख शीतोष्ण घास प्रदेश है। महाद्वीपों के भीतरी भाग में स्थित होने के कारण एवं समुद्री प्रभाव से दूर पड़ जाने के कारण यहाँ की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है, जिसमें तापमान की अत्यधिक विषमता पाई जाती है। इस क्षेत्र में गर्मी में वाहनिक वर्षा एवं जाड़े में चक्रवातीय प्रकार की वर्षा होती है। वर्षा की मात्रा कम होती है। वर्षा की कमी के कारण ही इन प्रदेशों की प्रमुख वनस्पति घास है। इन परिवेशों में शाकाहारी एवं मासांहारी दोनों प्रकार के जीव जनतु पाए जाते हैं।

इन प्रदेशों में मानव प्रारंभ से ही पशुपालन का काम करता आया है। इन क्षेत्रों में रहने वाले निवासियों का अर्थतन्त्र पशुपालन एवं उससे संबंधित उत्पाद पर ही आधारित होता है। खाद्यान्न के रूप में पशुओं से प्राप्त दूधमांस, वस्त्र के रूप में पशुओं के चमड़े एवं ऊन से निर्मित वस्त्र एवं आवास के रूप में पशुओं के चमड़े से निर्मित तम्बू का प्रयोग करते हैं। यहाँ रहनेवाली प्रमुख जनजाति आदिवासी फिरगीज कज्जाख है जो चलवासी पशुचारण का कार्य करते हैं। चलवासी जीवन पद्धति के कारण इनका सामाजिक संगठन अविकसित है। सामाजिक एवं सरकारी संस्थाएँ इनके उत्थान हेतु प्रयासरत है।

वर्तमान समय में इन क्षेत्रों में आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकी कृषि का प्रारंभ हुआ है। इन क्षेत्रों में व्यापारिक अन्नोत्पादक कृषि एवं व्यापारिक पशुपालन कृषि का प्रारंभ हुआ है, जिससे यह विश्व का सबसे अधिक गेहूँ एवं मक्के की उत्पादक क्षेत्र बन गया है। विश्व की सबसे अधिक भेड़ें भी यही पाली जाती है। कृषि क्रांति के कारण ह इस क्षेत्र को "विश्व के भविष्य का अन्नोंभंडार" कहा जाने लगा है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल है।

8.5 व्यवहृत शब्दावली (Key Words Used)

किरगीज (Kirghiz) :- चलवासी पशुचारण पर आधारित जीवनयापन करनेवाली शीतोष्ण घास प्रदेश के मध्य एशिया में निवास करने वाली प्रजाति को किरगीज के नाम से जाना जाता है।

युर्त *(Yort) :- किरगीज प्रजाति के चमड़े निर्मित आवास को यूर्त कहा जाता है। यह चलता-फिरता आवासीय प्रारूप तम्बू है।